मीरा

हंसा प्रदीप



बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम,बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत–पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

बच्चों की कहानियां—३६

मीरा

हंसा प्रदीप

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
दिनेश शाह

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

मूल्य :
दो रुपये

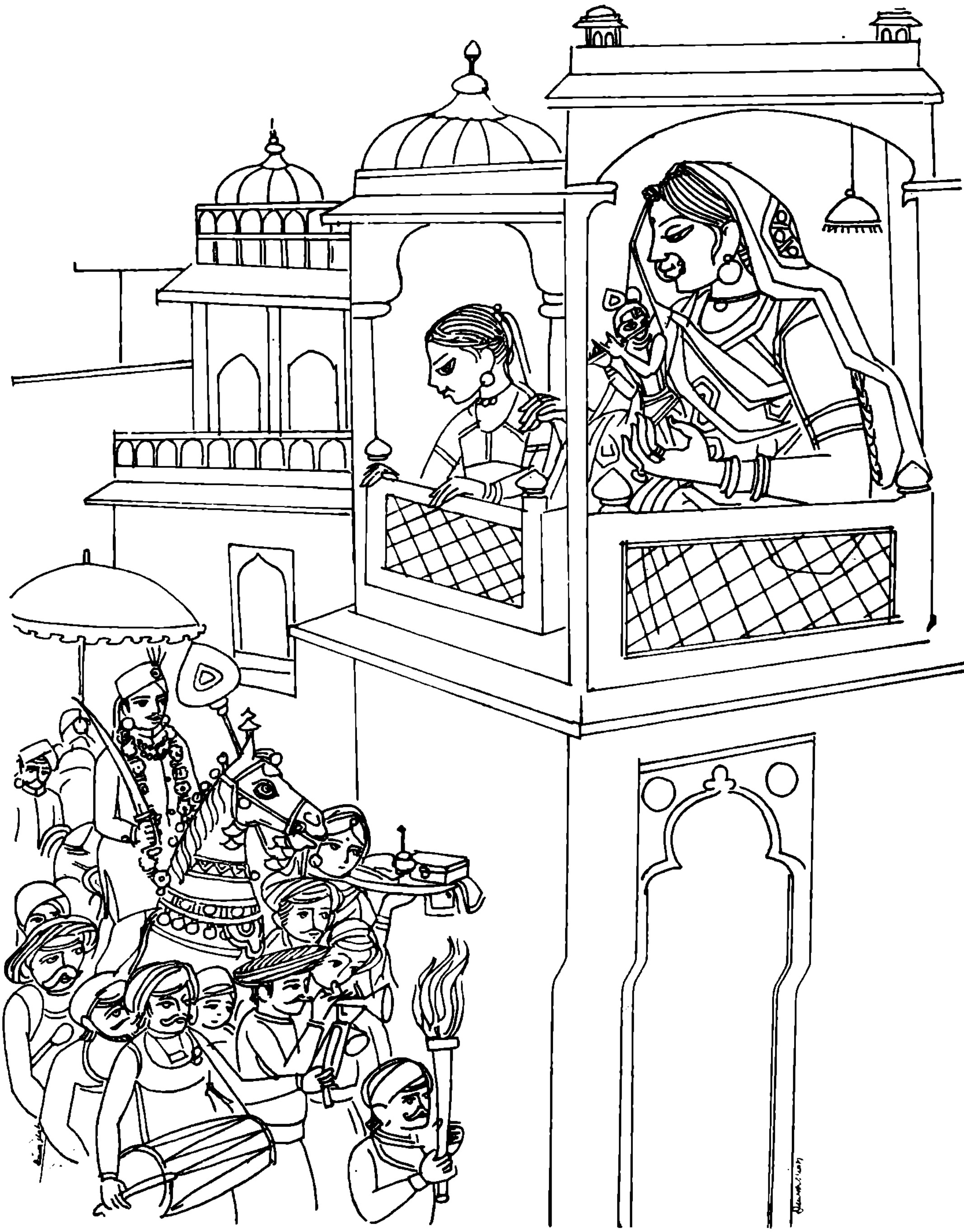
मीरा

मारवाड़ के कुड़की गांव में आज किसी लड़की की शादी थी। बड़े सबेरे से शहनाई की मधुर आवाज के साथ-साथ ढोल-नगाड़ों की आवाज भी सुनायी पड़ रही थी। एक आंगन में मंडप बंधा था। वहां दौड़-धूप भी हो रही थी। बारात के आने की खबर से शहनाइयों का सुर भी तेजी से ऊपर चढ़ा और शोरगुल भी बढ़ गया।

बारात जैसे ही राव रतन सिंह के महल के नीचे से गुजरी, रतन सिंह की पांच साल की लड़की मीरा की आंखें गहरी नींद से खुल गयीं। बड़ी उत्सुकता से, खुली खिड़की से उस नीचे झांका और देखा कि बैन्ड-बाजे के साथ, नये-नये कपड़े-गहने पहने लोग जा रहे हैं। उनके बीच एक खूब सजा हुआ घोड़ा था, जिस पर एक सुन्दर युवक साफा बांधे, मोतियों का हार और फूलों की माला पहने चमकती शेरवानी में सजा, हाथ में तलवार लिए, बड़ी शान से बैठा था।

मीरा ने अपनी मां से पूछा, "मां ये सब कौन हैं ?"

मां ने कहा, "ये सारे बाराती हैं बेटी, वह जो घोड़े पर शान से बैठा है, वह दूल्हा है।"



"देख, ये ही तेरे दूल्हा हैं!"

"मां, मेरा दूल्हा कौन है ?" तपाक से भोली मीरा ने पूछ लिया । मां को हंसी आ गयी । उसने कमरे में रखी कृष्ण की मूर्ति को दिखाकर सहज ही कह दिया, "देख, वे गिरधर गोपाल हैं न, वे ही तेरे दूल्हा हैं !"

उस गिरधर गोपाल के सिर पर भी तो सुन्दर मोरपंख लगा था । मीरा ने वह देखा । मूर्ति के पास जाकर बड़े कौतूहल से उसे देखने लगी । कृष्ण की उस सुंदर मूर्ति से उसे लगाव-सा हो गया । रोज सबेरे उठकर वह मूर्ति को देखती, उससे बातें करती, उसे नहलाती, कपड़े पहनाती । उसके आगे भोजन, पानी, दूध सब रखती और फिर आप ही सब कुछ खा-पी लेती ।

मूर्ति उसकी अभिन्न साथी बन गयी ।

एक दिन मीरा के दादा, राव दुदाजी घर पर आये । उन्होंने अपनी पोती का यह खेल देखा । वे कृष्ण के परम भक्त थे । दूसरे दिन सबेरे जब वे पूजा करने बैठे तो उन्होंने पुकारा, "बेटी मीरा, अपने दूल्हे को लेकर यहां आ ।"

मीरा अपने गिरधर गोपाल को छाती से लगाये दादाजी के पास आयी ।

"दादाजी, देखिये न, मेरा गोपाल मुझसे रूठ गया है । आज सुबह से हंसता भी नहीं है ।" मीरा ने दादा से शिकायत की ।

"बेटी, रूठे को रिझाने के लिए गाना पड़ता है । तू अपने दूल्हे को रिझाने के लिए कभी कुछ गाती भी है या नहीं ?" दादाजी ने चंदन घिसते हुए पूछा ।

"मुझे कोई गाना सिखाता ही नहीं है । आप मुझे सिखाइए । मैं अपने गोपाल को रोज सुनाया करूंगी । तब तो वह मुझसे नहीं रूठेगा न दादाजी ?"

"नहीं, कभी नहीं रूठेगा ।" दादाजी ने पूजा करते हुए भजन गाना शुरू किया । मीरा ध्यान से सुनने लगी । भजन पूरा होने पर मीरा ने वही भजन बहुत ही भावपूर्ण और सुरीले कंठ से दादाजी को सुनाया ।

कृष्ण के प्रति उसका लगाव बढ़ता गया । अब रात को वह अपने गोपाल को अपने साथ ही सुलाने लगी । सपनों में भी वह अपने गोपाल के साथ तरह-तरह के खेल खेलती, उसे चिढ़ाती

और फिर उससे माफी मांगती । रात को कभी सपने में देखती कि पीछे से आकर गिरधर ने उसकी ओढ़नी खींची है । आधी रात को अचानक उसकी नींद खुल जाती है । वह देखती कि उसके साथ सोये गिरधर की मूर्ति के नीचे उसकी ओढ़नी दबी हुई है । वह मूर्ति से कहती है, "ओह गोपाल, तुम कैसे हो, सोने भी नहीं देते ! जानते हो, मैं कहां जा रही थी ? तुम्हें ही खोजने जा रही थी ।"

उसकी बातों से मां की नींद खुल गयी । उन्होंने पूछा, "अरी मीरा, यह आधी रात गये किससे बातें कर रही है ?"

मीरा ने कहा, "मां, देखो न, यह गोपाल मेरी चुनरी खींचता है । फट जायेगी तो ? मैं उससे ही बातें कर रही थी ।"

"अरी बावली, सो जा अब, बातें कल करना ।" मां ने हंसते हुए कहा ।

सुबह उठकर मीरा के मुंह से यह भजन सुनाई पड़ा :

"माई री मैं तो मधुवन में
निरख लियो नंदलाल,
परख लियो नंदलाल...माई री ।"

धीरे-धीरे मीरा बड़ी होती गयी । बालिका से किशोरी बन गयी । फिर भी वह अपने गिरधर की ही प्रेमिका बनी रही । अपने प्यारे कृष्ण के प्रेम के सिवा और किसी तरह के दुनियावी प्रेम को वह जानती ही नहीं थी । पुरानी परिपाटी में बंधे परिवारवालों से यह कब तक सहा जाता ? उन्होंने मीरा के इस पागलपन को दूर करने का उपाय सोच लिया । उसके लायक वर की तलाश शुरू कर दी । आखिर वह शुभ दिन भी आ ही गया जब मीरा के लिए दूल्हा लेकर बारात रतन सिंह के दरवाजे पर पहुंची ।

चित्तौड़ के राजघराने के बारातियों के बीच खूबसूरत, सफेद घोड़े पर वीर राणा सांगा के बड़े कुमार वीर भोजराज दूल्हा बने बैठे थे । मीरा ने आज भी ऊपर की खिड़की से बारात देखी और अपने गिरधर से कहने लगी, "देख गोपाल, दूल्हा आ गया है । तू भी देख । हम इसी के साथ चित्तौड़ जायेंगे । उन अनजान लोगों के बीच तू ही तो एक मेरा सखा होगा !"

बेटी को विदा करते समय मां ने दूल्हे भोजराज की ओर संकेत करते हुए कहा, "बेटी, इस जनम के ये ही तेरे पति हैं। इनकी बात कभी मत टालना। इन्हें कभी, किसी बात का दुःख न पहुंचे, इसका खयाल रखना। कुल की मर्यादा निभाना," कहते-कहते मां की आंखें भर आयीं।

कुल की मर्यादा और माता-पिता की सीख का मीरा को बराबर खयाल था। मीरा ने अपने पति को खुश रखने में कोई कसर न उठा रखी। कभी ऐसा मौका नहीं आया कि पति को उसने नाखुश किया हो। मगर अपने प्रियतम गिरधर गोपाल से वह बिल्कुल बिछुड़ी नहीं थी। घर के कामकाज से निपटकर वह सीधे अपने कृष्ण के मंदिर में पहुंच जाती, और भक्ति में भजन गाती :

"घड़ी एक नहिं आवड़े
तुम दरसण बिन मोय..."

कभी गाने लगती,

"ऐसी लगन लगाय, कहां तू जासी
तुम देख्या बिन कल न पड़त है
तड़प–तड़प जिय जासी..."

गाते-गाते मीरा गिरधर के ध्यान में इतनी खो जाती कि उसे संसार की मर्यादाओं का ध्यान ही न रहता। वह हाथ में झांझ और पैरों में घुंघरू बांधकर नाचने लगती :

"मैं तो गिरधर आगे नाचूंगी
नाच-नाच रसिक रिझाऊं
प्रीत पुरातन जांचू री
श्याम प्रीत री बांध घुंघरिया
मोहन म्हारो सांचा री...."

मीरा को कई बार ऐसा महसूस होता जैसे गिरधर आदमी बन कर अपनी मीरा को गले लगाते हैं। कई बार मीरा को गोपाल की मुरली की मधुर धुन भी सुनायी पड़ने का भ्रम होने लगता। सपनों में वह कृष्ण के साथ रास भी खेलती। रात-रात भर अपने प्रियतम से बातें करती। कई बार मीरा के पति भोजराज मीरा को गिरधर के मंदिर से उठाकर ले जाते, तब मीरा होश में आती।

मीरा की सौतेली सास को मीरा का यह आचरण कुछ अच्छा न लगा। एक दिन सास ने मीरा को बुलाकर स्नेह से कहा, "देख बेटी, तू मंदिर

में दिन-रात जा-जाकर भजन गाती है, यह अच्छी बात नहीं है । इतने बड़े राजघराने की तू बहू है । कुल की मर्यादा का तुझे ध्यान रखना चाहिए । परिवार और अपने पति के प्रति तू अपना फर्ज निभाती है, इतना ही तो एक बहू के लिए काफी नहीं है ।"

"माताजी, मैं सबके प्रति अपना फर्ज निभाती हूं । फिर बाकी समय दूसरी औरतों की तरह परनिन्दा या साज-सिंगार-शयन में गंवाना मुझे अच्छा नहीं लगता है । यह समय मैं अपने गिरधर गोपाल के साथ बिताती हूं । मुझे अपने साज-सिंगार में नहीं, अपने कृष्ण के साज-सिंगार में रुचि है । उनके भजन में, उनके गुणगान में मुझे आनन्द मिलता है । इष्टदेव की पूजा-भजन करने से कुल को कलंक कैसे लग सकता है ?"

मीरा का इस प्रकार उत्तर देना सास को अच्छा न लगा, फिर भी बड़े संयम से उसने कहा, "बहू, हमारे कुल की देवी तो दुर्गा मैया हैं । गौरी शक्ति की देवी हैं । तू अब इस कुल की बहू है, इसलिए तुझे तो दुर्गा मां की पूजा करनी चाहिए । चल, मैं तुझे दुर्गा मां के दर्शन कराने ले जाती हूं ।"

मीरा की आंखें छलक उठीं । सास के पैरों में गिरकर फूट-फूटकर रो पड़ी, "माताजी, मुझे क्षमा करें । यह सिर तो मैं गिरधर गोपाल के चरण में अर्पण कर चुकी हूं । अब यह किसी दूसरे देवी-देवता के चरणों में नहीं झुक सकता । मां जी, मुझे माफ कीजिए । आपसे विनती करती हूं ।"

सास नाराज होकर वहां से चली गयी ।

मीरा के इस पागलपन का शुरू-शुरू में कुमार भोजराज ने भी विरोध किया था । मगर उसकी अटल भक्ति-भावना देखकर मीरा को रोकना उन्होंने मुनासिब न समझा ।

मीरा की ननद ऊदाबाई को भी मीरा का यह व्यवहार अच्छा न लगा । जाने-अनजाने पर-पुरुषों और साधु-संतों के सामने मीरा भजन गाये, नाचे यह उससे देखा न गया । उसने मीरा को समझाने की बहुत कोशिश की, मगर जिद्दी मीरा ने उसकी एक बात न मानी ।

ऊदाबाई से यह अपमान सहा न

गया । उसने अपनी सहेलियों के साथ मीरा को बदनाम करना शुरू किया ।

एक दिन बहुत गुस्से से ऊदाबाई अपने भाई से बोली, "भोजराज, अब तो हद हो गयी है । आप कब तक आंखें मूंदे, चुपचाप बैठे रहेंगे ? मीरा भाभी दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही हैं । रात-रात भर मंदिर में बैठी न जाने किसके साथ बातें किया करती हैं । हमने अपने कानों से उनकी बातें सुनी हैं । हम पर भरोसा न हो, तो खुद जाकर देख लो । यह हमारे कुल पर, चित्तौड़ पर कलंक है । भावी महाराजा की पत्नी होकर . . ."

ऊदाबाई का इतना कहना था कि गुस्से से पागल कुमार भोजराज खुली तलवार लेकर मीरा का कत्ल करने दौड़े । तकदीर से मीरा अपने महल में नहीं थी । कुंवर मंदिर की ओर दौड़े । रास्ते में किसी ने उन्हें समझाया कि ऐसी अधीरता से काम न लो । धीरज धरो । इस तरह की निंदा की सच्चाई का खुद पता करो । ऐसा न हो कि बाद में पछताना पड़े । भोजराज के गले यह बात उतर गयी । वे महल में वापस लौट आये, और रात होने



की राह देखने लगे।

आधी रात होने को आयी तो ऊदाबाई ने दरवाजा खटखटाया, "भैया, चलिए मंदिर में, देखिए अपनी भक्त-पत्नी की चाल! भक्ति जैसे पवित्र शब्द पर उसने कलंक लगाया है। हम खुद सुनकर आये हैं कि वह मंदिर में किसी से बातें कर रही हैं...."

भोजराज को तो इसी घड़ी का इंतजार था। वे तलवार लिए तेजी से मंदिर की ओर भागे। मंदिर का दरवाजा बंद था। बाहर से उन्होंने सुना, मीरा गा रही थी:

"हे री मैं तो प्रेम दीवानी,
मेरा दरद न जाने कोय..."

भजन पूरा हुआ और मीरा की आवाज सुनायी दी, "मेरे प्रीतम, तुम क्यों देर कर रहे हो? मैं तड़प रही हूं। मुझे गले लगा लो।...." बस, अब और आगे भोजराज से नहीं सुना जा रहा था। उन्होंने क्रोध में मंदिर के दरवाजे को जोरों से लात मारी। वह धड़ाम से खुल गया।

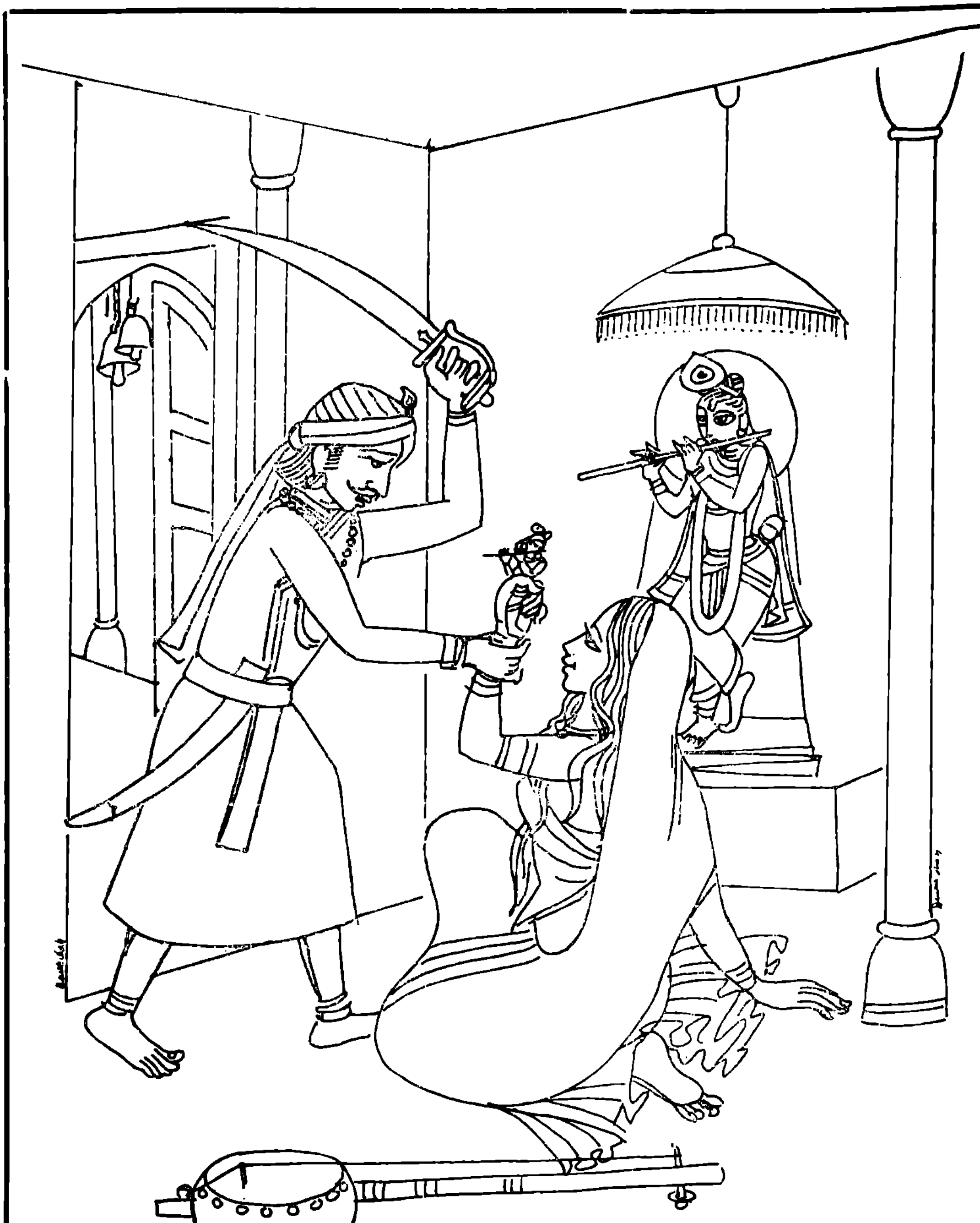
वहां तो कोई नहीं था। मीरा अपनी लगन में तल्लीन बैठी थी। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे। आवाज के साथ दरवाजा खुला, भोजराज अंदर आये, यह सबकुछ भी मीरा को पता न चला। भोजराज उसे बिल्कुल अकेली देखकर हक्का-बक्का रह गये। फिर भी उनका संदेह दूर न हुआ। उन्होंने सोचा कि एक छोटी-सी, निर्जीव प्रतिमा के साथ कोई इस तरह भावुकता से बातें कैसे कर सकता है? जरूर यहां कोई होगा। गुस्से में उन्होंने मीरा का हाथ पकड़कर झकझोरा, "बताओ, तुम अभी किसके साथ बातें कर रही थीं?"

मीरा ने भोलेपन से गिरधर की मूर्ति की ओर संकेत कर कहा, "देखिए, इसके साथ!"

"नहीं, तुम झूठ बोल रही हो। बताओ, तुम्हारा प्रेमी कहां है? मैं उसके खून का प्यासा हूं," क्रोध से चिल्लाकर भोजराज ने कहा।

"वह देखो, खड़ा तो है वह। कर दीजिए उसके टुकड़े-टुकड़े यदि आप कर सकते हैं तो," और यह कहते-कहते मीरा बेसुध होकर गिर पड़ी।

कुंवर के लिए यह अद्भुत अनुभव था। ऊदाबाई तथा उसकी सहेलियां



"बताओ, तुम अभी किसके साथ बातें कर रही थीं?"

भी यह देखकर दंग रह गयीं। उनके लिए भी यह अनोखा अनुभव था। उनके विचारों में परिवर्तन होने लगा। भाभी के भक्ति-भाव को वह आज तक समझ न पायी थी।

कुमार भोजराज वहां से चले आये। उन्होंने समझ लिया कि उनकी पत्नी पागल हो गयी है। उन्होंने मीरा के बारे में कुछ भी सोचना छोड़ दिया।

मीरा साधु-संतों के बीच वैसे ही उठती-बैठती रही और गिरधर के आगे भजन गाती, नाचती रही।

मीरा की कृष्ण-भक्ति के चर्चे दूर-दूर तक फैले। मुगल शहंशाह अकबर को भी कृष्ण-भक्ति में डूबी मीरा के दर्शन करने की इच्छा हुई। उसने अपने संगीत-सम्राट तानसेन से कहा, "मियां तानसेन, मेवाड़ के होनेवाले महाराणा की कृष्ण-प्रेम में दीवानी पत्नी मीरा रानी के दर्शन करने और उनके भजन सुनने की इच्छा हमें हुई है!"

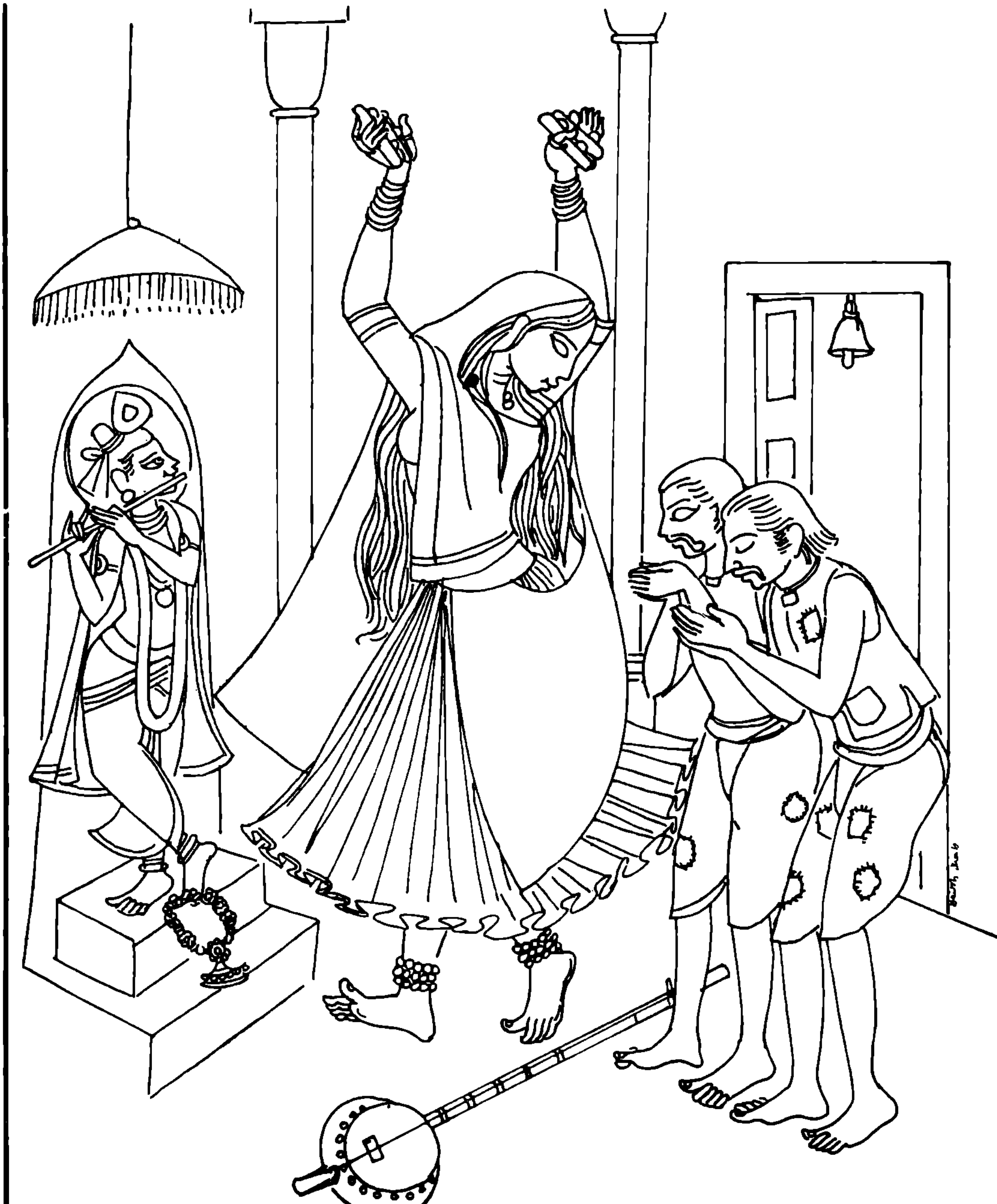
तानसेन ने कहा, "मगर बादशाह सलामत, हम हिंदुओं के मंदिर में कैसे जा पायेंगे? और फिर वहां हमारी जान का भी खतरा है।"

अकबर ने कहा, "कहते तो तुम ठीक हो, मगर हम वहां वेश बदलकर जायेंगे। कोई हमें पहचान न पायेगा।"

बादशाह अकबर और तानसेन भिखारी के लिबास में मीरा के मंदिर में पहुंचे और उसके भावपूर्ण भजन सुने। मीरा की भावभक्ति से प्रभावित होकर उन्होंने रत्नों का एक हार कृष्ण के चरणों में रख दिया, और मीरा के चरण छूकर प्रणाम किया।

अकबर और तानसेन ने मंदिर में जाकर मीरा के दर्शन किए, भजन सुने तथा उसके पैरों को भी छुआ, यह बात दूसरा दिन आते-आते तक खूब फैल गयी। कुमार भोजराज आपे से बाहर हो गया। वह सीधा मीरा के पास पहुंचा, "उन मुसलमानों को तुमने मंदिर में दाखिल होने ही कैसे दिया? अपने पैरों को छूने से तुमने मना न किया? शर्म नहीं आयी? चली जाओ, किसी नदी में जाकर डूब मरो। चली जाओ यहां से, और फिर कभी अपना चेहरा मुझे न दिखाना।"

पति के इन शब्दों को आज्ञा समझकर मीरा अपने गिरधर को साथ



"बादशाह अकबर और तानसेन भिखारी के लिबास में पहुंचे!"

लेकर राजमहल से निकल पड़ी। एक नदी किनारे जाकर डूबने के लिए उसने पानी में पैर बढ़ाये। सूर्यास्त का समय था। गिरधर को अपनी छाती से लगाये, आंखें बन्द किए वह गिरधर के ध्यान में ही डूबी थी कि अचानक उसे लगा कि उसका गिरधर बंसी बजाकर उसे वृन्दावन में बुला रहा है। उसे कृष्ण की आवाज सुनायी दी, "मेरी मीरा, अब तुम मेरी हो। उठो, आओ मेरे साम्राज्य में। वृन्दावन की कुंज-गलियों में, ब्रजधाम में आओ। वहां मैं तुमसे मिलूंगा। मैं आगे जा रहा हूं। तुम मेरे पीछे चली आओ।..."

मीरा की समाधि टूटी। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। कृष्ण ने उसे वृन्दावन बुलाया है तो वह जरूर जायेगी।

मीरा ब्रजधाम पहुंची। उसे वह भूमि बड़ी परिचित-सी लगी। उसने अपने गिरधर की पूजा और भजन का सिलसिला फिर शुरू कर दिया। उसके भावपूर्ण भजनों से भक्तजनों की भीड़ जमने लगी और सबको वहां के वातावरण में पवित्रता महसूस होने लगी। मीरा की ख्याति चारों ओर फैलती गयी और लोग दूर-दूर से उसके दर्शन करने आने लगे।

मीरा के चले जाने के बाद, उधर चित्तौड़ पर बहुत विपदाएं आयीं। कुछ लोगों ने भोजराज से इस बात का जिक्र किया। भोजराज को भी यही महसूस हुआ और उन्होंने मीरा की खोज शुरू की। जल्दी ही उन्हें पता चला कि मीरा वृन्दावन में है। वे खुद उसके पास गये। उससे माफी मांगते हुए कहा, "मीरा, मैं बहुत लज्जित हूं। मैंने तुम्हें बहुत तकलीफें दीं। तुमने सब कुछ सहा, मगर तुम्हारे गोपाल ने इसका बदला ले लिया। अपने प्यारे भक्त को दुःख देनेवाले को भगवान सजा देता ही है, यह अब मैं समझ पाया हूं। इसलिए मुझे माफ कर दो, और लौट चलो घर।" भोजराज के बहुत मनाने पर मीरा वापस चित्तौड़ आयी।

मीरा को भोजराज ने कुछ भी कहना छोड़ दिया। वह दिन-रात गिरधर की पूजा में और साधु-संतों की सेवा में खोयी रहती।

किन्तु मीरा का यह सुख अधिक न टिका। विवाह के दस वर्षों के भीतर ही कुंवर भोजराज की मृत्यु हो गयी। केवल तेईस वर्ष की उम्र में ही मीरा विधवा हो गयी। विधवाओं के लिए उन दिनों राजपूतों में बड़े कठोर नियम थे। मीरा को अब पुरुषों के सामने नहीं पड़ना चाहिए था, उसका घर से बाहर निकलना भी उचित नहीं था। लेकिन मीरा अपने को विधवा कहां मानती थी! उसके पति तो अजर-अमर थे। वह बेधड़क साधु-संतों के बीच बैठकर भजन गाती थी।

मीरा के राज-परिवार के लोग वैसे भी मीरा का साधु-संतों से मिलना पसन्द नहीं करते थे, और अब तो मीरा विधवा थी। घर के बाहर कदम रखने पर उसका विरोध होने लगा।

राणा सांगा और कुंवर भोजराज की मृत्यु के बाद कुंवर रतन सिंह चित्तौड़ की गद्दी पर बैठे। राणा रतन सिंह को अपनी भाभी मीरा का यह व्यवहार अच्छा न लगा। उसे लगा कि मीरा के कारण उसके खान-दान को कलंक लग रहा है। उसने भाभी को तंग करना शुरू किया। भगवान के नाम पर मीरा सब कुछ सहती गयी। वह जानती थी कि सच्चे प्रेम का मार्ग सदा कठोर होता है। वह अपनी राह पर चलती ही गयी।

राणा ने एक दिन मीरा को कहला भेजा, "साधु-संतों के बीच मंदिर में जाकर नाचना-गाना छोड़ दो। एक विधवा को यह सब शोभा नहीं देता है। इससे कुल की बदनामी होती है।"

मीरा ने जवाब भेजा, "वह विधवा नहीं है। उसका पति गिरधर गोपाल कभी मर नहीं सकता है। वह तो उसी को रिझाने के लिए भजन गाती है।"

अपनी अवज्ञा पर राणा को बहुत गुस्सा आया।

मीरा को वैसे भी दुःखों से भरे संसार से कोई लगाव नहीं रह गया था। वह तो अपने गोपाल के सामने समर्पित हो चुकी थी।

मीरा की पूजा-भक्ति में जब राणा ने बेहद बाधा डालनी शुरू की तब उसने चित्तौड़ छोड़कर वृन्दावन चले जाने का फैसला कर लिया। वृन्दावन से वह फिर कृष्ण की भूमि द्वारिका नगरी गयी।

मीरा के चले जाने के बाद चित्तौड़ पर विपदाओं के बादल टूट पड़े। मुगल सेना से संघर्ष में राणा रतन सिंह की मृत्यु हो गयी। राज्य की बाग-डोर राणा विक्रम सिंह के हाथ में आयी। वे भी मुगलों से हार गये। उनकी भी मृत्यु हो गयी। अब उदय सिंह ने राज्य-भार संभाला। उसने लोगों की सलाह से मीरा को वापस चित्तौड़ बसने का निमंत्रण लेकर अपने मंत्री को भेजा।

मीरा के अंत की कथा बहुत विवादास्पद है। लाखों दिलों में भक्ति की पवित्र लौ जगानेवाली इस संत-महिला की मृत्यु के बारे में एक कथा यह कहती है कि जब मीरा को वापस चित्तौड़ आने का संदेश मिला, तो वह अपने गिरधर से आज्ञा लेने मंदिर में गयी। वहां वह बड़ी दीनता से कहने लगी, "मेरे गिरधर, मैं अब बहुत थक गयी हूं। तुम्हारा विरह अब मुझसे सहा नहीं जाता है। मुझे अब तू अपने में समा ले। मुझे गले लगा ले। हे गिरिधर, मेरे प्राण, आज मैं तुझे नहीं छोड़ूंगी।..."

फिर कहते हैं कि मीरा को बाहर आने में काफी देर हो गयी तो लोगों ने दरवाजा खोला। मगर वहां तो मीरा थी ही नहीं। वह कृष्ण की मूर्ति में ही लीन हो गयी थी।

पवित्र प्रेम की प्रतीक बनकर आज भी मीरा जीवित है। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन कैप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२

